बायोफ्लॉक मत्स्य पालन से बदली जिंदगी: संघर्ष से सशक्तिकरण तक



नाम-	**रईसा खातून**
गाँव का नाम-	**पूरापिरई**
विकासखंड का नाम-	**बहादुरपुर**
जनपद का नाम-	**बस्ती**
उत्पादक समूह का नाम-	**सारा प्रेरणा मछली उत्पादक समूह**
बायोफ्लॉक मत्स्य पालन शुरुआत वर्ष-	**नवम्बर-2024**

रईसा खातून, उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद के बहादुरपुर ब्लॉक के पूरापिरई गांव में रहने वाली एक साधारण महिला हैं, जिनका जीवन कभी संघर्षों से भरा हुआ था। उनका परिवार आठ सदस्यों का था और घर की आर्थिक जिम्मेदारी मुख्य रूप से उनके पति पर थी, जो एक इलेक्ट्रिशियन के रूप में काम करते थे। सीमित आय के कारण परिवार की मूलभूत आवश्यकताएँ भी पूरी करना कठिन हो जाता था।

रईसा कभी हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठीं। वह बकरी पालन करती थीं, लेकिन इस कार्य से साल भर में मात्र ₹20,000 से ₹25,000 तक की ही आय हो पाती थी। इसी आय से वह किसी तरह परिवार की जरूरतों को पूरा करने और अपनी बेटी के इलाज में सहयोग कर पाती थीं। परंतु इतनी सीमित आय में परिवार चलाना, बच्चों का भविष्य संवारना और इलाज कराना बेहद चुनौतीपूर्ण था।

रईसा के परिवार में पहले से ही मछली पालन का थोड़ा अनुभव मौजूद था। उनके ससुर पारंपरिक तरीके से छोटे तालाब में मछली पालन किया करते थे। इसी कारण रईसा के मन में इस कार्य के प्रति पहले से ही जिज्ञासा बनी हुई थी। वह उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के स्वयं सहायता समूह से जुड़ी हुई थीं। एक दिन समूह की बैठकों के दौरान उन्हें बायोफ्लॉक तकनीक के बारे में जानकारी मिली। यह जानकारी उनके लिए एक नए अवसर की तरह थी, और उन्होंने इसे अपनाने का निर्णय लिया।

रईसा के जीवन में एक बेहद दुखद मोड़ तब आया था, जब उनकी दो बेटियों में से एक की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई थी। इस घटना ने उन्हें भीतर से तोड़ दिया था, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। अपनी दूसरी 8 वर्ष की बेटी के बेहतर भविष्य के लिए उन्होंने खुद को संभाला और आगे बढ़ने का संकल्प लिया। वह चाहती थीं कि उनकी बेटी अच्छी शिक्षा प्राप्त करे और एक सम्मानजनक जीवन जिए।

इसी दौरान रईसा को "सारा प्रेरणा मछली उत्पादक समूह" के माध्यम से बायोफ्लॉक मत्स्य पालन से जुड़ने का अवसर मिला। उत्तर प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा उन्हें बस्ती जनपद में बायोफ्लॉक मत्स्य पालन का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। साथ ही ग्राम संगठन से उन्हें ₹60,000 का ऋण भी उपलब्ध कराया गया। इसके अतिरिक्त, मत्स्य विभाग द्वारा संचालित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना से जुड़कर उन्हें ₹30,000 की सब्सिडी प्राप्त हुई, जिससे उनका आत्मविश्वास और भी मजबूत हुआ।

नवंबर 2024 में उन्होंने 15,000 लीटर क्षमता का बायोफ्लॉक टैंक स्थापित किया और दिसंबर 2024 में सिंघी मछली बीज का संचयन टैंक मेंकिया। शुरुआत में उन्हें कई नई तकनीकी बातें सीखनी पड़ीं, लेकिन प्रशिक्षण और निरंतर मार्गदर्शन के कारण उन्होंने इन चुनौतियों को पार किया और धीरे-धीरे इस कार्य में दक्षता हासिल की।

रईसा अपना अनुभव साझा करते हुए बताती थीं कि बायोफ्लॉक मत्स्य पालन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें पूरे दिन का समय नहीं देना पड़ता था। उन्हें केवल सुबह और शाम मछलियों को चारा देना होता था, पानी की जाँच तथा आवश्यकता पड़ने पर पानी बदलना होता था। इस कारण वह अपने घरेलू कार्यों, खेती और बकरी पालन के साथ इस कार्य को संतुलित रूप से संभाल पा रही थीं।

लगातार एक वर्ष की मेहनत के बाद, दिसंबर 2025 में उन्होंने मछलियों की हार्वेस्टिंग की। इस दौरान उन्हें कुल 195 किलोग्राम मछली उत्पादन प्राप्त हुआ, जिसे उन्होंने ₹310 प्रति किलोग्राम की दर से बेचा। इससे उन्हें ₹60,450 की आय हुई। जब इसमें ₹30,000 की सब्सिडी जोड़ी गई, तो उनकी कुल आय ₹90,450 तक पहुंच गई।

यदि उनकी बकरी पालन से होने वाली आय (लगभग ₹25,000) को भी शामिल किया जाए, तो उनकी कुल वार्षिक आय लगभग ₹1,15,000 तक पहुंच गई है। यह उनके लिए एक बड़ी उपलब्धि है, क्योंकि अब वे पहले की तुलना में अधिक आत्मनिर्भर और सशक्त बन चुकी है।
रईसा बताती है कि जिले में प्राप्त प्रशिक्षण और सही मार्गदर्शन के कारण ही वे पहले ही चक्र में इतना अच्छा लाभ अर्जित कर सकीं। आज उनका जीवन पहले से कहीं अधिक स्थिर और बेहतर हो चुका है। अब वे अपनी बेटी को एक अच्छे इंग्लिश मीडियम स्कूल में शिक्षा दिला रही है और उसकी हर जरूरत का ध्यान रख पा रही है। जहाँ पहले इलाज के लिए भी पैसे जुटाना मुश्किल था, वहीं अब वे अपने परिवार की आवश्यकताओं को सम्मानपूर्वक पूरा कर पा रही है।

रईसा कहती हैं— "बायोफ्लॉक ने मुझे सिर्फ आमदनी नहीं दी, बल्कि अपने दम पर खड़े होने की ताकत भी दी।"

रईसा खातून की यह यात्रा केवल आय बढ़ाने की कहानी नहीं है , बल्कि यह आत्मविश्वास, सीखने की लगन और सही अवसर मिलने पर जीवन को बदलने की एक सशक्त मिसाल बन चुकी है।